इकाई-7

॥संस्कृतसाहित्य॥

संस्कृतसाहित्य काव्यशास्त्र एवं छन्द परिचय-

(क) प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय-

1. भास

भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे, जिनके जीवनकाल के विषय में अधिक जानकारी नहीं है। **'स्वप्रवासवदत्ता'** उनके द्वारा लिखित सबसे चर्चित नाटक है, जिसमें एक राजा के अपने रानी के प्रति अविरहनीय प्रेम और पुनर्मिलन की कहानी है। कालिदास जो गुप्तकालीन समझे जाते हैं, ने भास का नाम अपने नाटक में लिया है, जिससे लगता है कि वह गुप्त काल से पहले रहे होंगे; पर इससे भी उनके जीवनकाल का अधिक ठोस प्रमाण नहीं मिलता। आज कई नाटकों में उनका नाम लेखक के रूप में उल्लिखित है, किन्तु **1912 में त्रिवेंद्रम में गणपति शास्त्री** ने नाटकों की लेखन शैली में समानता देखकर उन्हें भास-लिखित बताया। संस्कृत नाटककारों में 'भास' का नाम उल्लेखनीय है। भास कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। सबसे पहले **'गणपति शास्त्री'** ने भास के तेरह नाटकों की खोज की थी। अभी तक भास के विषय में जो सामग्री मिलती है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि भास ही लौकिक संस्कृत के प्रथम साहित्यकार थे। भास का आविर्भाव **ई. पू. पाँचवी - चौथी** शती में हुआ था। नाटककार भास के कुल 13 उपलब्ध रचनाएं हैं इनके चार वर्ग हैं।

कृतियाँ-

1. **उदयन कथा मूलक-** प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्रवासवदत्ता
2. **रामायण मूलक-** प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक ।
3. **महाभारत मूलक-** ऊरुभंगम्, दूतवाक्यम्, पंचरात्र,मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, दूतवाक्य, कर्णभारम् ।
4. **लोककथा मूलक-** अविमारक, चारुदत्तम् ।

उपाधि- कविताकामिनीहास, अग्निमित्र (ज्वलनमित्र), भासो हास।

2. अश्वघोष

अश्वघोष, बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक थे। **बुद्धचरितम्** इनकी प्रसिद्ध रचना है। **कुषाणनरेश कनिष्क** के समकालीन महाकवि अश्वघोष का **समय ई. प्रथम शताब्दी** का अन्त और द्वितीय का आरम्भ है।

जीवन वृत्त- उनका जन्म **साकेत (अयोध्या)** में हुआ था। उनकी **माता** का नाम **सुवर्णाक्षी** था। चीनी परम्परा के अनुसार महाराज **कनिष्क पाटलिपुत्र** के अधिपति को परास्त कर वहाँ से अश्वघोष को अपनी राजधानी **पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर)** ले गए थे। कनिष्क द्वारा बुलाई गई **चतुर्थ बौद्ध संगीति** की अध्यक्षता का गौरव एक परम्परा **महास्थविर पार्श्व** को और दूसरी परम्परा महावादी अश्वघोष को प्रदान करती है। ये **सर्वास्तिवादी बौद्ध** आचार्य थे जिसका संकेत **सर्वास्तिवादी "विभाषा"** की रचना में प्रायोजक होने से भी हमें मिलता है। ये प्रथमतः परमत को परास्त करनेवाले **"महावादी"** दार्शनिक थे। इसके अतिरिक्त साधारण जनता को बौद्धधर्म के प्रति **"काव्योपचार"** से आकृष्ट करनेवाले महाकवि थे।

अश्वघोष की प्रमुख रचनाएँ- इनके नाम से प्रख्यात अनेक ग्रन्थ हैं, परंतु प्रामाणिक रूप से अश्वघोष की साहित्यिक कृतियाँ केवल चार हैं-

कृतियाँ-

महाकाव्य- बुद्धचरितम्, सौंदरानंद ।

नाटक- शारिपुत्रप्रकरणम्,

गंडीस्तोत्रगाथा, सूत्रालङ्कारशास्त्रम् के रचयिता संभवतः ये नहीं हैं।

रीति- वैदर्भी

उपाधि- आर्यभदन्त, बौद्धभिक्षु ।

3. महाकवि कालिदास

कालिदास (**5वीं शताब्दी ई.**) संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे । उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं । कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें **राष्ट्रीय कवि** का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य

रचना मानी जाती है। **मेघदूतम्** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की **कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यञ्जना शक्ति** अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है ।

रीति- कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने अपने शृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

समय- कालिदास किस काल में हुए और वे मूलतः किस स्थान के थे इसमें काफ़ी विवाद है। चूँकि, कालिदास ने द्वितीय शुंग शासक **अग्निमित्र** को नायक बनाकर **मालविकाग्निमित्रम्** नाटक लिखा और **अग्निमित्र** ने 170 ईसापूर्व में शासन किया था, अतः कालिदास के समय की एक सीमा निर्धारित हो जाती है कि वे इससे पहले नहीं हुए हो सकते। छठीं सदी ईसवी में बाणभट्ट ने अपनी रचना हर्षचरितम् में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में कालिदास का जिक्र है अतः वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस प्रकार कालिदास के प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसवी के मध्य होना तय है। दुर्भाग्यवश इस समय सीमा के अन्दर वे कब हुए इस पर काफ़ी मतभेद हैं। विद्वानों में (i) द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का मत (ii) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत (iii) तृतीय शताब्दी ईसवी का मत (iv) चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत (v) पाँचवी शताब्दी ईसवी का मत, तथा (vi) छठीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का मत प्रचलित थे। इनमें ज्यादातर खण्डित हो चुके हैं या उन्हें मानने वाले कुछ लोग ही हैं किन्तु मुख्य संघर्ष 'प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत और 'चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत' में है।

प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत - परम्परा के अनुसार कालिदास उज्ञयिनी के उन राजा विक्रमादित्य के समकालीन हैं जिन्होंने ईसा से 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया। **विक्रमोर्वशीय** के नायक पुरुरवा के नाम का विक्रम में परिवर्तन से इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदास उज्ञयनी के राजा विक्रमादित्य के राजदरबारी कवि थे। इन्हें **विक्रमादित्य के नवरत्नों** में से एक माना जाता है।

चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत - प्रो॰ कीथ और अन्य इतिहासकार कालिदास को गुप्त शासक **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** और उनके **उत्तराधिकारी कुमारगुप्त** से जोड़ते हैं, जिनका शासनकाल चौथी शताब्दी में था। ऐसा माना जाता है कि **चंद्रगुप्त द्वितीय** ने **विक्रमादित्य** की उपाधि ली और उनके शासनकाल को स्वर्णयुग माना जाता है।

जन्म स्थान- कालिदास के जन्मस्थान के बारे में भी विवाद है। मेघदूतम में उज्ञैन के प्रति उनकी विशेष प्रेम को देखते हुए कुछ लोग उन्हें उज्ञैन का निवासी मानते हैं। साहित्यकारों ने ये भी सिद्ध करने का प्रयास किया है कि कालिदास का जन्म **उत्तराखंड** के रूद्रप्रयाग जिले के **कविल्ठा** गांव में हुआ था। कालिदास ने यहीं अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी और यहीं पर उन्होंने मेघदूत, कुमारसंभव और रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना की थी।

कालिदास के प्रवास के कुछ साक्ष्य **बिहार के मधुबनी** जिला में भी मिलते हैं। कहा जाता है **विद्योतमा** (कालिदास की पत्नी) से शास्त्रार्थ में पराजय के बाद कालिदास यहीं गुरुकुल में रुके। कालिदास को यहीं ज्ञान का वरदान मिला। यहां आज भी कालिदास का डीह है। यहाँ की मिट्टी से बच्चों के प्रथम अक्षर लिखने की परंपरा आज भी यहाँ प्रचलित है। कुछ विद्वानों ने तो उन्हें बंगाल और उड़ीसा का भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहते हैं कि कालिदास की श्रीलंका में हत्या कर दी गई थी लेकिन विद्वान इसे भी कपोल-कल्पित मानते हैं। महाकवि कालिदास की मुख्य रूप से (7) प्रसिद्ध **रचनाएं** हैं-

कृतियाँ-

नाटक- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्र,

महाकाव्य- रघुवंशमहाकाव्य, कुमारसंभव,

खण्डकाव्य- मेघदूत,

अन्य कृतियाँ - कालीस्तोत्र, गंगा अष्टक, ज्योतिर्विद्या,

उपाधियां- दीपशिखा, रघुकार, कविकुलगुरु, कविताकामिनीविलास, उपमासम्राट,

4. शूद्रक

शूद्रक गुप्तकाल में उत्पन्न हुए थे। उनका प्रसिद्ध नाटक **'मृच्छकटिकम्'** है, जिसे सामाजिक नाटकों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस प्रकरण है इसका रचनाकाल प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है । इसके दस अंकों में ब्राह्मण **'चारुदत्त'** जो समय-चक्र से निर्धन है तथा उज्ञयिनी की प्रसिद्ध गणिका **'वसंतसेना'** के आर्दश प्रेम की कहानी वर्णित है।

भाषा शैली- मृच्छकटिकम् की शैली सरल तथा वर्णन विस्तृत है। **प्राकृत** भाषा की सभी शैलियों का प्रयोग इसमें एक साथ मिलता है। प्रथम बार संस्कृत में शूद्रक ने ही राज परिवार को छोड़कर समाज के मध्यम वर्ग के लोगों को अपने नाटक के पात्र बनाये। इसके कथानक तथा वातावरण में स्वाभाविकता है । इस दृष्टि से शूद्रक की नाट्य कला बड़ी प्रशंसनीय है। पाश्चात्य आलोचकों ने इसकी बड़ी सराहना की है तथा **मृच्छकटिकम्** को सार्वभौम आकर्षण का नाटक बताया है, जिसका सफल मंचन विश्व

- ❖ **भवभूति का सामान्य परिचय-**
- **निवास-** दक्षिण भारत पद्मपुर,
- **गोत्र-** काश्यप ये कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तीरीय शाखा पाठी ब्राह्मण थे।
- **पिता-** नीलकंठ,
- **माता-** जातुकर्णी
- **पितामह-** भट्टगोपाल
- **प्रिय छंद-** अनुष्टुप, शिखरिणी
- **उपासक-** शिव के,
- भवभूति का मूलनाम- श्रीकण्ठ (कवि के रूप में भवभूति के नाम से विख्यात)
- **रीति-** गौडी, उत्तररामचरितम् में वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है।
- ये विविध शास्त्रों के विशेषज्ञ थे अतः इनकों **पदवाक्यप्रमाणज्ञः** कहां जाता है ।
- **महावीरचरितम** में इन्होंने अपने को **परिणतप्रज्ञः** कहा है।
- **उत्तररामचरितम्** में इन्होंने अपने को **वश्यवाक्** कहा है।
- भवभूति के नाटकों में **अभिधावृत्ति** मुख्य है भवभूति की कृतियों में **ओजगुण** अधिक है।
- **प्रशस्ति-** 'कवयः कालिदासाद्याः भवभूतिः महाकविः'।

कृतियां-

नाटक- उत्तररामचरितम् (7अंक), महावीर चरितम (7अंक) ।

प्रकरण ग्रंथ- मालतीमाधवम् (10अंक) ।

उपाधि- श्रीकंठ, पदवाक्यप्रमाणज्ञः, परिणतप्रज्ञः, वश्यवाक्, शिखरिणीकवि, अम्बेक/उदम्बर, श्रीकण्ठपदलांछनः ।

12. भट्टनारायण

भट्ट नारायण संस्कृत के महान नाटककार थे। वे अपनी केवल एक कृति **वेणीसंहार** के द्वारा संस्कृत साहित्य में अमर हैं। संस्कृत वाङ्मय में समुपलब्ध नाटकों में इसका विशिष्ट स्थान है। विद्वज्जन इसे नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुकूल दृष्टिकोण से लिखा गया नाटक मानते हैं इसीलिए इसके उदाहरणों को अपने लक्षणग्रंथों में **वामन, विश्वनाथ** आदि ने विशेष रूप से उद्धृत किया है। कवि ने **वेणीसंहार** की प्रस्तावना में अपने आप को **मृगराजलक्ष्मा** कहा है । इससे ज्ञात होता है कि इन्हें **कविंद्र या कविमृगेंद्र** कहा जाता था ।

जीवन वृत्त- भट्टनारायण का जीवनवृत्त अनिश्चित है किंतु वामन और आनंदवर्धनाचार्य के ग्रंथों में **वेणीसंहार** के उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि यह उनसे पूर्ववर्ती हैं। वामन का समय **बेल्वल्कर** ने **सप्तम शताब्दी** का अंतिम भाग स्वीकृत किया है। इस प्रकार नारायण **अष्टम शताब्दी** से पूर्व के सिद्ध होते हैं।

कृति- वेणीसंहार एकमात्र नाटक (6अंक)।

उपाधि- मृगराज, कविमृगेंद्र, कविंद्र ।

13. विल्हण

बिल्हण, ग्यारहवीं शताब्दी के कश्मीर के प्रसिद्ध कवि थे । जिनकी रचना **चौरपंचाशिका** प्रसिद्ध है। उनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना **विक्रमांकदेवचरित** है जो इतिहास ग्रन्थ है। बिल्हण के **विक्रमांकदेवचरित** में कल्याण के चालुक्य राजा **विक्रमादित्य पंचम्** (1076-1127) के पराक्रमों का वृत्तांत है।

- ❖ **विल्हण का सामान्य परिचय-**
- **पिता-** जेष्ठकलश
- **पितामह-** राजकलश
- **माता-** नागदेवी
- **जन्म स्थान-** कश्मीर (खौनमुख गांव)

कृतियां - विक्रमांगदेवचरित (18 सर्ग), कर्णसुंदरी, चौरपञ्चाशिका, सुक्तिमुक्तावली, सुभाषितावली ।

उपाधि- विद्यापति ।

14. श्रीहर्ष

श्रीहर्ष की 12 वीं सदी के प्रसिद्ध कवियों में गिनती होती है। वह बनारस एवं कन्नौज के **गहड़वाल शासकों, विजयचन्द्र एवं जयचन्द्र** की राजसभा को सुशोभित करते थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की, जिनमें **'नैषधचरितम्** महाकाव्य उनकी कीर्ति का स्थायी स्मारक है । **अलंकृत शैली** के सर्वश्रेष्ठ कवि श्रीहर्ष में उच्चकोटि की काव्यात्मक प्रतिभा थी तथा वे अलंकृत शैली के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। श्रीहर्ष महान् कवि होने के साथ-साथ बड़े दार्शनिक भी थे। **'खण्डन-खण्ड-खाद्य'** नामक ग्रन्थ में उन्होंने अद्वैत मत का प्रतिपादन किया। इसमें न्याय के सिद्धान्तों का भी खण्डन किया गया है। व्यूलर के अनुसार हर्ष का निर्विवाद समय 12 वीं शताब्दी उत्तरार्ध है ।

जीवन चरित्र-

पिता- श्रीहीर, **माता-** मामल्ल देवी, **निवास-** कन्नौज

कन्नौज के राजा जयचंद्र उनके आश्रय दाता थे । इन्होनें चिंतामणि जप के फलस्वरुप सिद्धि और विद्वत्ता प्राप्त की । इनके द्वारा रचित ग्रन्थ बृहत्रयी का सर्वोत्कृष्ट रत्न **नैषधीयचरितम्** 22 सर्गात्मक है । श्रीहर्ष के काव्य में भाषा सौंदर्य, भाव सौष्ठव और पदलालित्य है ।

कृतियाँ- 1. स्थैर्यविचारप्रकरण, 2. श्रीविजयप्रशस्ति,
3. हिंदप्रशस्ति, 4. खंडनखंडकाव्य,
5. शिवशक्तिसिद्धि, 6. नवसाहसांगचरितचम्पू,
7. नैषधीयचरितम, 8. अर्णव वर्णन,
9. गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, 10. मुक्तिमुक्तावली
11. चौरपंचाशिका, 12. सुभाषितावली

उपाधि- श्रृंगारमृतशीतगु ।

15. अंबिकादत्तव्यास

अम्बिकादत्त व्यास (जन्म- 1848, मृत्यु- 1900) ब्रजभाषा के कुशल और सरस कवि थे। ये 'भारतेन्दु युग' के कवि और लेखक थे। ये भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समकालीन तथा उनसे प्रभावित हिन्दी सेवी साहित्यकार थे। 12 वर्ष की अवस्था में **'काशी कविता वर्धिनी सभा'** ने 'सुकवि' की उपाधि से इन्हें सम्मानित किया था। अम्बिकादत्त व्यास की प्रशंसा भारतेन्दु ने **'कविवचन सुधा'** में भूरि-भूरि की है। ये विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इन्हें **हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बांग्ला, दर्शन, न्याय, वेदान्त** में महारथ हासिल थी। इन्होंने गद्य और पद्य में 50 से अधिक पुस्तकें लिखी थीं। व्यास जी का आश्चर्यजनक वृत्तांत अपने समय में **'फन्तासी'** उपन्यास था। **शिवराज विजय** इनका महत्वपूर्ण संस्कृत उपन्यास है। काशी से **'वैष्णव-पत्रिका' (1884 ई.)** का आरम्भ इन्होंने किया था, जो बाद में **'पियूष-प्रवाह'** नाम से साहित्यिक पत्रिका में रूपांतरित हो गयी। **कवित्त और सवैया शैली** में इनकी ब्रजभाषा की अनेक रचनाएँ लोकप्रिय हुईं। **'बिहारी बिहार'** नामक ग्रन्थ में इन्होंने **'बिहारी सतसई'** के आधार पर कुंडलियों की रचना की थी। **'अवतार मीमांसा'** अम्बिकादत्त का प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ है। **'पावन पचासा'** - अम्बिकादत्त की एक काव्यकृति है।

- **निवास**- जयपुर राजस्थान
- **पिता**- दुर्गादत्त

कृतियाँ- इन्होंने हिंदी तथा संस्कृत में छोटी-बड़ी 78 पुस्तकें लिखी ।

उपन्यास-

1. शिवराजविजयम् (3) विराम प्रत्येक विगम में चार निश्वास।
2. गद्यकाव्यमीमांसा 3. अवतारमीमांसाकारिका
4. कथाकुसुम 5. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम
6. सहस्त्रनामरामायणम् 7. मित्रलाभ
8. दुःखद्रुमकुठार

नाटक- 9. सामवतम् ।

उपाधि- 1. घटिकाशतक , 2. सुकवि, 3. शतावधान,
4. अभिनवबाण, 5. भारतरत्न

16. पंडिता क्षमाराव (1890 – 1954)

- **माता**- उषा देवी,
- **पिता**- शंकर पांडुरंग (संस्कृत के विद्वान और बाल्यावस्था में निधन)
- **भाषा**- प्रसादमयी,
- **पति**- डॉ राघवेंद्रराव,
- **गुरु**- विद्यालंकार पंडित नगण्य
- **उपाधि**- पंडिता
- क्षमाराव ने छोटी-बड़ी 50 पुस्तकें लिखी जिसमें सात एकांकी चार तीन अंक वाले नाटक चार पद्य जीवन चरित्र 35 लघु कथाएं तथा विविध निबंध ग्रंथ हैं ।

कृतियाँ-

- **काव्यात्मक रचनाएं**-
  1. कथा पचंक (पद्यबंध) 2. ग्राम ज्योति 3. कथा मुक्तावली
- **खंडकाव्य**- मीरा लहरी
- **महाकाव्य** - 1. तुकारामचरित 2. रामदासचरितम 3. श्री विज्ञानेश्वर चरित 4. सत्याग्रह गीता 5. उत्तर सत्याग्रह गीता, गांधी चरित्र इत्यादि भी इनकी रचनाएं हैं । **स्वराजविजयम् में** (45) अध्याय में गांधी की संपूर्ण जीवन माया के साथ स्वतंत्रता इतिहास वर्णन है।

17. वी. राघवन (वेंकटराम राघव)1908-1979

इन्हें **पद्मभूषण** और संस्कृत के लिए **साहित्य अकादमी पुरस्कार** सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुऐ हैं । ये 120 से अधिक पुस्तकों तथा 1200 लेखों के लेखक थे इन्होंने संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र पर किताबें लिखी । इन्होंने संस्कृत काव्य के बड़े जाने-माने काव्य भोज के अंग का संपादन और अनुवाद किया । 1996 इन्हें **जवाहरलाल फेलोशिप** से सम्मानित किया गया । रविंद्र नाथ टैगोर का पहला नाटक **वाल्मीकि प्रतिभा** का इन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया ।

कृतियाँ-

- **नाटक**- अभिनव सुंदरी, महाश्वेता, रासलीला, विकट नितंम्बाः, लक्ष्मी स्वयंवरम्, अनारकली ।
- **महाकाव्य**- श्री मुत्तुस्वामीदीक्षित चरितम् ।
- **लघुकाव्य**- 1. पैशुन्य 2. महात्मा 3. फाल्गुन 4. कर्मयोगी 5. मध्याह्नः 6. उषा 7. प्रतीक्षा
- **संस्कृत की अन्य कृतियां**-
  संस्कृत रविंद्रम्, बाल्मीकि प्रतिभा, नटीर पूजा,
- **अन्य**- अभिनव गुप्त एवं उनके कार्य, श्रृंगार मंजरी, पलाण्डु मनदाना (प्रहसन), अलंकार शास्त्र विरूपहा का चोला चंपू ।

- **स्तोत्र काव्य-** श्री कामाक्षीमातृका स्तोत्र, श्री मीनाक्षीसुप्रभातम्

18. श्रीधरभास्कर वर्णेकर

श्रीधरभास्कर वर्णेकर का जन्म 31 जुलाई 1918 महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ। कांची पीठ के शंकराचार्य ने प्रज्ञा भारती की उपाधि से इनको विभूषित किया इन्होंने **अर्वाचीन संस्कृत साहित्य** नाम से मराठी में शोध प्रबंध लिखा और **संस्कृत भवितव्यम्** पत्रिका का संपादन किया इन्हें **रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी** सम्मान भी मिला।

कृतियाँ-

- **लघु काव्य-** श्रामगीता 118 पद्य।
- इनका छत्रपति शिवाजी के चरित्र पर निर्मित महाकाव्य **श्री शिवराज्योदय** (68) सर्गात्मक है।
- **वात्सल्यरसायनम्** इस काव्य का दूसरा नाम (श्रीकृष्णबाललीला शतकम्) है।

उपाधि- प्रज्ञा भारती।

॥काव्यशास्त्र॥

साहित्यशास्त्र के सम्प्रदाय-

(1) रससम्प्रदाय- भरतमुनि। (300 ई.पू.)

रचना- नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)।

रस सिद्धान्त-

रस संप्रदाय के मुख्य आचार्य भरत मुनि हैं। रस के विषय में सर्वप्रथम विवेचन **"नाट्यशास्त्र"** में मिलता है। जिन्होंने नाट्यरस का ही मुख्यतः विश्लेषण किया और उस विवरण को अवान्तर आचार्यों ने काव्यरस के लिए भी प्रामाणिक माना। यह सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है। भरतमुनि के रससिद्धान्त के व्याख्याकार के रूप में - **1. भट्टनायक, 2. भट्टलोल्लट, 3. शङ्कुक, 4. अभिनवगुप्त, 5. विश्वनाथ** ये पाँच आचार्य प्रसिद्ध हैं।

रस का प्रमुख सूत्र-

''विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'' (ना.शा.)

यह प्रसिद्ध रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है।

रससम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-

"भोजराज, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय"।

(2) अलङ्कारसम्प्रदाय- भामह (700ई.)

रचना- काव्यालंकार (भामहालंकार 12 परिच्छेद)।

अलङ्कार सिद्धान्त-

रस सम्प्रदाय के बाद इसका दूसरा स्थान है। अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य भामह हैं। इसके अन्तर्गत **'भामह विवरण'** के निर्माता **'उद्भट'** और उनके बाद - **दण्डी, रुद्रट** आदि तथा पश्चाद्वर्ती - **प्रतिहारेन्दुराज, जयदेव, अप्पयदीक्षित** आदि अनेक आचार्य आते हैं।'अप्पयदीक्षित' की **'परिमल'** टीका सुप्रसिद्ध है। इस मत में अलंका को ही काव्य की आत्मा माना जाता है। इस शास्त्र के इतिहास में यही संप्रदाय प्राचीनतम तथा व्यापक प्रभावपूर्ण अंगीकृत किया जाता है। अलङ्कार सम्प्रदाय के अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं किन्तु उसे प्रधनता नहीं देते हैं। इनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्व अलङ्कार ही है। अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना उष्णविहीन अग्नि की कल्पना के सदृश है -

"अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।।"

(चन्द्रालोक-जयदेव)

अलङ्कारसम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।

रसवदलङ्कार-

1. रसवत्, 2. प्रेय, 3. ऊर्जस्विन्, 4. समाहित।

ये चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं। **भामह** और **दण्डी** दोनों ने इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही इसका अन्तर्भाव किया है-

''रसवद्दर्शितस्पष्टश्रृंगारादिरसं यथा।'' (भामह, काव्यालङ्कार 3.6)

''मधुरे रसवद्वापि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।'' (दण्डी, काव्यादर्श 3.51)

3. रीतिसम्प्रदाय- वामन। (800 ई.)

रचना- काव्यालंकारसूत्रवृत्ति (5 अधिकरण)।

रीति सिद्धान्त-

रीति सम्प्रदाय आचार्य वामन (9वीं शती) द्वारा प्रवर्तित एक काव्य-सम्प्रदाय है जो रीति को काव्य की आत्मा मानता है। यद्यपि संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' एक व्यापक अर्थ धारण करने वाला शब्द है। लक्षणग्रंथों में प्रयुक्त 'रीति' शब्द का अर्थ ढंग, शैली, प्रकार, मार्ग तथा प्रणाली है। 'काव्य रीति' से अभिप्राय मोटे तौर पर काव्य रचना की शैली से है। रीतितत्व काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, पद्धति, प्रणाली या मार्ग है। परन्तु वर्तमान समय में 'शैली' (स्टाइल) के समानार्थी के रूप में यह अधिक समाहृत है। आचार्य वामन ने रीति सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा की है। उन्होंने काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में 'रीति' को काव्य की आत्मा घोषित किया है। उनके अनुसार 'पदों की विशिष्ट रचना ही रीति है' (**विशिष्टपदरचना रीतिः**)। विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं - **विशेषो गुणात्मा।** वामन ने गुण को विशेष महत्व दिया है। रीति काव्य की आत्मा है और गुण रीति के कारणभूत वैशिष्ट्य की आत्मा है। रीति शब्द और अर्थ के आश्रित रचना चमत्कार का नाम है जो माधुर्य, ओज और प्रसाद गुणों के द्वारा चित्र को द्रवित, दीप्त और परिव्याप्त करती हुयी रस दशा तक पहुँचाती है।

काव्य में रीति का विशेष महत्त्व है। रीति के अन्य परिभाषाकार कहते है कि काव्य में रीति पदों के संगठन से रस को प्रकाशित करने में सहायक

होती है। इस प्रकार रीति का काव्य में वही स्थान है जो शरीर में आंगिक संगठन का है। जिस प्रकार अवयवों का उचित सन्निवेश शरीर के सौन्दर्य को बढाता है, शरीर को उपकृत करता है उसी प्रकार वर्णों का यथास्थान प्रयोग शब्द रूपी शरीर और अर्थ रूपी आत्मा के लिए विशेष उपकारक है।

आचार्य वामन ने रीति के तीन भेद तय किये हैं– **वैदर्भी रीति, गौडी रीति, पाञ्चाली रीति।** आचार्य दण्डी केवल दो ही भेद मानते हैं, वे पाञ्चाली का समर्थन नहीं करते। दण्डी, 'रीति' के स्थान पर ''मार्ग' शब्द का प्रयोग करते हैं। परवर्ती आचार्यो ने रीति के तीन से भी अधिक भेद स्थापित किये हैं। लाट देश में प्रयुक्त होने वाली एक 'लाटी' रीति का प्रादुर्भाव हुआ। बाद में **'भोज'** ने **'मालवी'** और **'अवन्तिका'** नामक दो अन्य रीतियों का अविष्कार किया। आचार्य विश्वनाथ रीति को काव्य का उपकारक मानते हैं। 'वक्रोक्तिजीवित' के लेखक कुन्तक ने रीति का खुलकर विरोध किया, आचार्य मम्मट उनके समर्थन में आये और रीति को वृत्तियों से जोड़ने की बात की। **'राजशेखर'** ने रीति को काव्य का **'बाह्य तत्व'** बताया। उनके अनुसार, – **'वाक्यविन्यासक्रमो रीतिः'**। किन्तु यह सब विरोध विद्वानों की आम सहमति नहीं पा सका और वामन के रीति सम्बन्धी विचारों को मान्यता मिली। **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** यह इनका प्रमुख सिद्धान्त है।

वामन ने 10 गुणों का वर्णन किया है -

1. ओज, 2. प्रसाद,
3. श्लेष, 4. समता,
5. कान्ति 6. समाधि
7. माधुर्य, 8. सौकुमार्य
9. उदारता 10. अर्थव्यक्ति

काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।
तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।। **(वामन)**

वामन ने इन दो सूत्रों को लिखकर गुण तथा अलङ्कारों का भेद प्रदर्शित करते हुए अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों के विशेष महत्व को प्रदर्शित किया है। मम्मटादि आचार्यों ने रीति की उपयोगिता स्वीकार की है किन्तु इसे काव्य की आत्मा स्वीकार नहीं किया है। उनके अनुसार रीतियों की स्थिति वैसी है जैसे शरीर में आँख, कान, नाक आदि अवयवों की-

''रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्।'' (मम्मट)

4. ध्वनिसम्प्रदाय – आनन्दवर्धन। (850 ई0)

रचना- ध्वन्यालोक (4 उद्योत)।

ध्वनि सिद्धान्त-

ध्वनि सिद्धान्त, भारतीय काव्यशास्त्र का एक सम्प्रदाय है। भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों में यह सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार **'अर्थ ध्वनि'** को माना गया है। इस सिद्धान्त की स्थापना का श्रेय **'आनंदवर्धन'** को है किन्तु अन्य सम्प्रदायों की तरह ध्वनि सिद्धान्त का जन्म आनंदवर्धन से पूर्व हो चुका था। स्वयं आनन्दवर्धन ने अपने पूर्ववर्ती विद्वानों का मतोल्लेख करते हुए कहा है कि-

"काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"।

अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है ऐसा मेरे पूर्ववर्ती विद्वानों का भी मत हैं। आनंदवर्धन के पश्चात 'अभिनवगुप्त' ने 'ध्वन्यालोक' पर 'लोचन टीका' लिखकर ध्वनि सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया। आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त दोनों ने रस और ध्वनि का अटूट संबंध दिखाकर रस मत का ही समर्थन किया था। आन्नदवर्धन ने **'रस ध्वनि'** को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि माना हैं जबकि **'अभिनवगुप्त'** रस-ध्वनि को **'ध्वनित'** या **'अभिव्यंजित'** मानते हैं। परवर्ती आचार्य मम्मट ने ध्वनि विरोधी मुकुल भट्ट, महिम भट्ट, कुन्तक आदि की युक्तियों का सतर्क खंडन कर ध्वनि सिद्धान्त को प्रबलित किया। उन्होंने व्यंजना को काव्य के लिए अपरिहार्य माना इसीलिए उन्हें **'ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार स्फोटवाद सिद्धान्त है काव्यशास्त्र में ध्वनि का संबंध 'व्यंजना शक्ति'से है। **''काव्यास्यात्मा ध्वनिः।''** आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य का आत्मा स्थानीय तत्व है - **प्रतीयमान।**

''प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्तु वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्र प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।''

(ध्व. 1.4)

- इन सभी सम्प्रदायों में ध्वनि सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्वपूर्ण है। 'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचर्य' - **मम्मट**
- ध्वनि काव्य की आत्मा है –
  "काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"। (ध्व. 1-1)
- ध्वनि के तीन प्रकार- **वस्तु, अलंकार, रस।**
  ''एवं वस्त्वलंकार रसभेदेन त्रिधाध्वनिः।''

ध्वनिकार के मतानुसार जहां पर वाच्य अपने स्वरूप को तथा वाचक शब्द अपने अर्थ को गौण बनाकर व्यङ्ग्य अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को ध्वनि कहते हैं।

ध्वनिसम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-

रूय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ, इत्यादि।

5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय- कुन्तक। (10 वीं शती उत्तरार्द्ध)

रचना- वक्रोक्तिजीवितम् (4 उन्मेष)।

वक्रोक्ति सिद्धान्त-

वक्रोक्ति दो शब्दों 'वक्र' और 'उक्ति' की संधि से निर्मित शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है- ऐसी उक्ति जो सामान्य से अलग हो। टेढा कथन अर्थात जिसमें लक्षणा शब्द शक्ति हो। भामह ने वक्रोक्ति को एक अलंकार माना था। उनके परवर्ती कुन्तक ने वक्रोक्ति को एक सम्पूर्ण सिद्धान्त के रूप में विकसित कर काव्य के समस्त अंगों को इसमें समाविष्ट कर लिया। इसलिए कुन्तक को वक्रोक्ति संप्रदाय का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है।